ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS:

बौद्ध धर्म एवं भूगोल एक समीक्षात्मक अध्ययन

Rakhi Jain Reserch Scolar Bundelkhand Univercity Jhansi

1. लोक रचना

(5 वीं शताब्दी के वसुबन्धुकृत ने अपने अभिधर्मकोश में लोक रचना इस प्रकार बतलाई हैं) लोक के अधोभाग में सोलह लाख योजन ऊँचा अपरिमित वायू मण्डल है। उसके ऊपर 11 लाख बीस हजार योजन ऊँचा जल मण्डल है1। उसमें 3 लाख बीस हजार योजन कंचनमय भूमण्डल है2। जल मण्डल और कंचन मण्डल का विस्तार 12 लाख, 3 हजार, 4 सौ 50 योजन तथा परिधि छत्तीस लाख, दस हजार तीन सौ पचास योजन प्रमाण है3।

कांचनमय भूमण्डल के मध्य में मेरूपर्वत है। यह अस्सी हजार योजन नीचे जल में डूबा हुआ है। तथा इतना ही ऊपर निकला हुआ है4। इससे आगे अस्सी हजार योजन विस्तृत और दो लाख चालीस हजार योजन प्रमाण परिधि से संयुक्त प्रथम सीता समुद्र है। जो मेरू को घेर कर अवस्थित है। इससे आगे चालीस हजार योजन विस्तृत युगन्धर पर्वत वलयाकार से स्थित है। इसके आगे भी इसी प्रकार से एक–एक सीता को अन्तरित करके आधे–आधे विस्तार से संयुक्त क्रमशः युगन्धर ईशाधर, खदीरक, सुदर्शन, अश्वकर्ण, विनतक और निमिन्धर पर्वत हैं। सीताओं का विस्तार भी उत्तरोत्तर आधा–आधा होता है5। उक्त पर्वतों में से मेरू चतुर्रत्नमय और शेष सात पर्वत स्वर्णमय है। सबसे बाहर अवस्थित सीता (महासमुद्र) का विस्तार तीन लाख बाईस हजार योजन प्रमाण है। अन्त में लोहमय चक्रवाल पर्वत स्थित है। निमिन्धर और चक्रवाल पर्वतों के मध्य में जो समुद्र स्थित है। उसमें जम्बूद्वीप, पूर्वविदेह, अवरगोदानीय और उत्तरकुरू ये चार द्वीप है6। इनमें जम्बूद्वीप मेरू के दक्षिण भाग में है, उसका आकार शकट के समान है। उसकी तीन भुजाओं में से दो भुजाएं दो–दो हजार योजन और एक भुजा तीन हजार, पचास योजन की है।

मेरू के पूर्व भाग में अर्द्ध चन्द्राकार पूर्वविदेह नाम का द्वीप है। इसकी भुजाओं का प्रमाण जम्बूद्वीप की तीन भुजाओं के समान है7। मेरू के पश्चिम भाग में मण्डल भाग अवरगोदानीय द्वीप है। इसका विस्तार अढ़ाई हजार योजन और परिधि साढ़े सात हजार योजन प्रमाण है8। मेरू के उत्तर भाग में समचतुष्कोण उत्तरकुरूद्वीप है। इसकी एक–एक भुजा दो–दो हजार योजन की है। इनमें से पूर्वविदेह के समीप में देह–विदेह उत्तर कुरू के समीप में कुरू गौरव जम्बूद्वीप के समीप में चामर, अवर चामर तथा गोदानीय द्वीप के समीप में शाटा और शेष उत्तरमन्त्री नामक अन्तर्द्वीप अवस्थित है। इनमें से चमरद्वीप में राक्षसों का और शेष द्वीप में मनुष्य का निवास है9। मेरू पर्वत के चार परिखण्ड (विभाग) हैं। प्रथम परिखण्ड शीता जल से दस हजार योजन ऊपर तक माना गया है। इसके आगे क्रमशः दस–दस हजार योजन ऊपर जाकर दूसरा, तीसरा और चौथा परिखण्ड है। इनमें से पहला परिखण्ड सोलह हजार योजन दूसरा परिखण्ड आठ हजार योजन, तीसरा परिखण्ड चार हजार योजन और चौथा परिखण्ड दो हजार योजन मेरू से बाहर निकला हुआ है। पहले परिखण्ड में पूर्व की ओर करोट पाणि यक्ष रहते हैं। दूसरे परिखण्ड में दक्षिण की ओर मालाधर रहते हैं। तीसरे परिखण्ड में पश्चिम की ओर सदामद रहते हैं और चौथे परिखण्ड में चातुर्माहाराजिक देव रहते हैं। इसी प्रकार शेष सात पर्वतों पर भी उक्त देवों का निवास है10।

जम्बूद्वीप में उत्तर की ओर बने कीटादि और उनके आगे हिमवान पर्वत अवस्थित हैं। हिमवान पर्वत से आगे उत्तर में पांच सौ योजन विस्तृत अनवतप्त नाम का अगाध सरोवर है। इससे गंगा, सिंधु, वक्षु और सीता नाम की चार नदियां निकली है। इस सरोवर के समीप जम्बूवृक्ष है, जिससे इस द्वीप का नाम जम्बूद्वीप पड़ा है। अनवतप्त सरोवर के आगे गन्धमादक नाम का पर्वत है11।

2. नरकलोंक

जम्बूद्वीप के नीचे बीस हजार योजन विस्तृत अवीचि नाम का नरक है। उसके ऊपर क्रमशः प्रतापन, तपन, महारौरव, रौरव, संघात, कालसूत्र और संजीव नाम के सात नरक और है12। इन नरकों के चारों पार्श्वभागों में कुकूल, कुणप, क्षुर्मा–गर्दिक, (असिपत्रवन, श्यामसबलस्वस्थान, अयः शाल्मलीवन) और खारोदक वाली वैतरणी नदी ये चार उत्सद हे। अर्बुद, निरर्बुद, अटट, उहहब, हुहूब उत्पल, पदम और महापदम नाम वाले ये आठ शीत नरक और है जो जम्बूद्वीप के अधोभाग में महानरकों के धरातल में अवस्थित है13।

3. ज्योतिलोंक

मेरूपर्वत के अर्द्ध भाग अर्थात भूमि से चालीस हजार योजन ऊपर चन्द्र और सूर्य परिभ्रमण करते हैं। चन्द्र मण्डल का प्रमाण पचास योजन और सूर्य मण्डल का प्रमाण इक्यावन योजन है। जिस समय जम्बूद्वीप में मध्यान्ह होता है उस समय उत्तरकुरू में अर्ध रात्रि पूर्वविदेह में अस्तगमन और अवरगोदानीय में सूर्योदय होता है14। भाद्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी से उसके हानि का आरंभ होता है। रात्रि की वृद्धि, दिन की हानि और रात्रि की हानि दिन की वृद्धि होती है। सूर्य के दक्षिणायन में रात्रि की वृद्धि और उत्तरायण में दिन की बुद्धि होती है15।

4–स्वर्गलोक

मेरू के शिखर पर त्रयस्त्रिंश (स्वर्ग) लोक है। इसका विस्तार अस्सी हजार योजन है। यहां पर त्रायस्त्रिंश देव रहते हैं। इसके चारों विदिशाओं में वज्रपाणि देवों का निवास है16। त्रायस्त्रिंश लोक के मध्य में सुदर्शन नाम का नगर है जो सुवर्णमय है। इसका एक–एक भाग ढाई हजार योजन विस्तृत है।उसके मध्य भाग में इन्द्र का अढ़ाई सो योजन विस्तृत वैजयन्त नामक प्रासाद है। नगर के बाहर भाग में चारों ओर चैत्ररथ पारूष्य, मिश्र और नन्दन ये चार वन चार है17। इनके चारों ओर बीस हजार योजन के अन्तर से देवों के क्रीड़ा स्थल हैं18।

त्रयस्त्रिंश लोक के ऊपर विमानों में याभ, तुपित, निर्माणरति और परनिर्मितवशवर्ती देव रहते हैं। कामधातुगत देवों में से चातुर्माहाराजिक और त्रायस्त्रिंश देव मनुष्य के समान काम सेवन करते हैं। याम, तुषित, निर्माणरति, परनिर्मितवशवर्ती देव क्रमशः आलिंगन, पाणिसंयोग, हसित और अवलोकन से ही तृप्ति को प्राप्त होते है19। कामधातु के ऊपर सत्तर स्थानों से संयुक्त रूपधातु है। वे सत्तर स्थान इस प्रकार हैं। प्रथम स्थान में ब्रह्मुकायिक, ब्रह्मपुरोहित और महाब्रह्म लोक है। द्वितीय स्थान में परिताभ, अप्रभाणाभ और आभस्वर लोक हैं। तृतीय स्थान में परित्तशुभ, अप्रमाणशुभ और शुभकृत्स्न लोक हैं। चतुर्थस्थान में अनभ्रक, पुण्यप्रसव, बृहदफल, पंचशुद्धावासिक, अवृह, अतप, सृदृश–सुदर्शन और अकनिष्ठ नाम वाले आठ लोक हैं। ये सभी देवलोक क्रमशः ऊपर–ऊपर अवस्थित हैं। इनमें रहने वाले देव ऋद्धि–बल अथवा अन्य देव की सहायता से ही अपने से ऊपर के देवलोक को देख सकते है20।

1. जम्बूद्वीपस्थ मनुष्यों का शरीर साढे तीन या चार हाथ, पूर्व विदेहवासियों का 7–8 हाथ, गोदानीय द्वीपवासियों का 14–16 हाथ और उत्तर कुरूस्थ मनुष्यों का शरीर 28–32 हाथ ऊंचा होता है। कामधातुवासी देवों में चातुर्महाराजिक देवों का शरीर 1/4 कोश और त्रायस्त्रिंशो का 1/2 कोश, यामों का 3/4 कोश, तुषितो का 1 कोश, निर्माणरति देवों का 11/4 कोश और परनिर्मितवशवर्ती देवों का शरीर 11/2 कोश ऊंचा है। आगे ब्रह्मपुरोहित, महाब्रह्म, परिताभ, अप्रभाणाभ, आभस्वर, परित्तशुभ, अप्रमाणशुभ और शुभकृत्स्न देवों का शरीर क्रमशः1, 11/2, 2,4,8,16,32,64 योजन प्रमाण ऊंचा है। अनभ्र देवों का शरीर 125 योजन ऊंचा है आगे पुण्यप्रसव आदि देवों के शरीर उत्तरोत्तर दुगुनी–दुगुनी ऊंचाई वाले हैं21।

सन्दर्भ सूची

1. जम्बूद्वीप–पण्णत्ती –संग्रहो 11/3
2. तिलोयपण्णत्ती, 4/2579
3. जम्बूद्वीप–पण्णत्ती –संग्रहो 11/38
4. तिलोयपण्णत्ती, 4/2592
5. तिलोयपण्णत्ती, 4/2609–2612
6. लोक विभाग, 3/11
7. तिलोयपण्णत्ती, 4/2616
8. जम्बूद्वीप–पण्णत्ती –संग्रहो, 11/25–28
9. तिलोयपण्णत्ती, 4/2631–2632
10. जम्बूद्वीप–पण्णत्ती –संग्रहो, 11/29–35
11. तिलोयपण्णत्ती, 4/2631–2762
12. जम्बूद्वीप–पण्णत्ती –संग्रहो, 11/44
13. जम्बूद्वीप–पण्णत्ती –संग्रहो, 11/46
14. तिलोयपण्णत्ती, 3/2764
15. लोक विभाग, 3/52
16. तिलोयपण्णत्ती, 3/2780
17. जम्बूद्वीप–पण्णत्ती –संग्रहो, 11/54
18. लोक विभाग, 3/57
19. जम्बूद्वीप–पण्णत्ती –संग्रहो, 11/73
20. तिलोयपण्णत्ती, 3/2829
21. जम्बूद्वीप–पण्णत्ती –संग्रहो, 11/42 से 45